

वर्ष -15

मार्च, 2019

अंक-154

Regd. Postal No. Dehradun-328/2016-18
Registered News Paper RNI No. UTTBIL/2006/19407

सहायकारी शक्तियों के सूक्ष्म संरक्षण में

सत्य देव संवाद

इस अंक में

संयोग का वियोग	02	आपने कहा था	16
देववाणी	03	देवजीवन की झलक	18
कोई कब रोएगा हमारे लिए	04	हृदय रोग कब व मुक्ति कैसे?	22
मंगलकामना/प्रार्थना	06	भाव प्रकाश	26
बाज़ के बच्चे का प्रशिक्षण	08	शोक समाचार	28
एक सेविका का पत्र	10	प्रेरणास्पद उद्बोधन सेवा	29
Do Not Waste Food	13	रजिस्ट्रेशन एक्ट	32

जीवन व्रत



‘सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकार ही में जीवन यह जावे।’
- देवात्मा



सम्पादक

नवनीत अरोड़ा

सहसम्पादक मण्डल

अनिता, चन्द्र गुप्त, वीरेन्द्र अग्रवाल

(सभी पद अवैतनिक हैं।)

ग्राफ़िक डिज़ाईनर : प्रमोद कुमार कुलश्रेष्ठ

For Motivational Talks/Lectures/Sabhas :
Visit our channel Shubhho Roorkee on
www.youtube.com

लेखक के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

वार्षिक सदस्यता ` 100, सात वर्षीय ` 500, पन्द्रह वर्षीय ` 1000
मूल्य (प्रति अंक): ` 9

सम्पर्क सूत्र :

पत्रिका सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु

दूरभाष संख्या: 01332-272000, 94672-47438, 99271-46962 (संजय धीमान)

समय : प्रतिदिन सायं 5:00 से सायं 9:00 तक (रविवार को छोड़कर)

e-mail: Shubhho.rke@gmail.com or navneetroorkee@gmail.com

संयोग का वियोग

जब तुम्हारे माँ-बाप ही तुम्हें दुनिया से छोड़कर चले गये तो फिर ज़रा सोचकर सोचो और कौन तुम्हारा साथ देगा। बस! दुनिया में तुम बिलकुल अकेले हो। आये भी अकेले और जाओगे भी अकेले। बस! बीच में थोड़े दिन का मेला है। संयोग का वियोग ज़रूर होगा। तुम नहीं छोड़ोगे तो वह तुम्हें छोड़कर चल देगा। वियोग मुख्य है, संयोग नहीं। बस! तुम और सब कुछ भूल जाओ, सिर्फ़ उस कब्र को याद रखो जहाँ तुम्हें देर-सबेर जाना ही होगा। इस दुनिया में कोई हमेशा रहने वाला नहीं है।

- मुनि तरुण सागर

Corrupt & Honest

**The difference between a corrupt and honest person is:
The corrupt person has price and the honest person has value. Create your own value in life and don't let others decide your price.**

काँटों से तालमेल

यदि हम गुलाब की तरह खिलना चाहते हैं, तो हमें काँटों के साथ तालमेल की कला सीखनी होगी।

Who is intelligent?

Weak people revenge, strong people forgive and intelligent people ignore.

प्रार्थना का उद्देश्य

मैं कठिनाइयों से बचने की प्रार्थना नहीं करता हूँ, बल्कि मैं उन्हें सहन करने के लिए पर्याप्त सामर्थ्य प्रदान करने की प्रार्थना करता हूँ।

ज़िन्दगी न तो भविष्य में है और ना तो अतीत में जीवन तो केवल वर्तमान में है।



देववाणी



मनुष्य होकर किसी जन के लिए अपने आत्मा के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान लाभ करने की आकांक्षा रखकर भी, परन्तु अपनी अयोग्यता के कारण उसके विषय में किसी सत्य के दर्शन व उपलब्ध करने के योग्य न होना अथवा ऐसी आकांक्षा से ही विहीन होकर अपने आत्मा के विषय में पूर्ण अन्धकार और अज्ञान की दशा में रहना, उसकी अत्यन्त कृपापात्र दशा है।

- देवात्मा

Hard Decision

One of the hardest decisions you will ever face in life, is choosing whether to walk away or take another step forward.

प्रेम और वहम

सबको इकट्ठा रखने की ताकत प्रेम में है,
जबकि सबको अलग करने की ताकत वहम में है।

सर्वश्रेष्ठ क्या ?

अपनी सोच को कैसे बेहतर बनाया जाए,
यह सीखने से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है।



गुदगुदी



A husband in a book store- "Do you have a book called, 'Husband- the Boss of the house'.....?
Sales girl, "Sir, Comics are on the 1st floor....."

आप खुश रहोगे तो आपके दुश्मनों को सजा अपने आप मिल जाती है।

कोई कब रोएगा हमारे लिए

सौभाग्यवान है वो मनुष्य, जो समय-समय पर आत्म चिन्तन करने का अवसर प्राप्त करता है तथा तदनुसार अपने आचार-विचार व व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाकर अधिक से अधिक आत्म विकास के पथ पर अग्रसर होता जाता है।

यदि किसी की मृत्यु का अवसर हो, तो कुछ बातें प्रायः दोहराई जाती हैं- 'मृत्यु के बाद सब यहीं रह जाता है', 'साथ तो कोई भी कुछ नहीं ले जाता', इंसान के अच्छे कर्म ही अन्ततः काम में आते हैं, आदि-आदि। इसी कड़ी में यह भी दोहराया जाता है-

जब तू आया जगत् में, जग हँसा तू रोय।

ऐसी करनी कर चलो, तू हँसे जग रोय।।

यहाँ पर हम सब के लिए आत्मचिन्तन का विषय यही है कि क्या हम वास्तव में ऐसी करनी कर पा रहे हैं या नहीं। वस्तुतः जग में हमारे लिए आँसू तभी कोई बहायेगा, यदि हम अपनी बारी में किसी के काम आए होंगे।

आइए, एक घटना के माध्यम से उपर्युक्त सत्य को अधिक स्पष्ट रूप से समझने की कोशिश करते हैं-

एक नगर में मृत्यु के अवसर पर बोलने हेतु एक विद्वान वक्ता को बुलाया गया। तेरहवीं यानि श्रद्धांजलि सभा के दिन उन्होंने बड़ा प्रभावशाली उपदेश दिया और मृत आत्मा के जीवन के बारे में भी बताया। इससे पूर्व ऐसे अवसर पर जब आप बोलते थे, तो प्रायः प्रत्येक श्रोता को रुला देते थे, किन्तु आज वो किसी को भी रुला न पाये।

सभा उपरान्त साहस करके उनसे किसी ने पूछ ही लिया, "श्रीमानजी, आज ऐसा क्या हुआ कि आप किसी को रुला नहीं पाए?" विद्वान वक्ता ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया, "मैंने अपनी ओर से टॉटी तो पूरी खोली, किन्तु पीछे टैंक में पानी ही न था। इसमें मैं क्या कर सकता था? असल में पानी यानि अच्छे कर्मों को जब मेरे द्वारा याद करवाया जाता है, उनसे ही उपस्थित लोगों की आँखों में आँसू आते हैं। मैं किसी को नहीं रुलाता, किसी के कमाएँ अच्छे काम ही लोगों को रुलाते हैं।"

वाह, क्या सुन्दर सन्देश छिपा है इस उत्तर में! हम सभी को अपने आचार-विचार, व्यवहार व कर्मों पर नज़र डालने की अतिशय आवश्यकता है, ताकि हम जीते जी विश्लेषण कर सकें कि हम कहाँ खड़े हैं और हमने ऐसा क्या किया है किसी के लिए,

जीवन का एक ही नियम है 'जो झुकता है वो प्राप्त करता है' वैसे ही कुएँ में उतरने वाली बाल्टी झुकती है तो भरकर बाहर निकलती है।

जिस पर कोई हमारे इस दुनिया से जाने के बाद रो सके तथा हम हँसते-हँसते परलोक जा सकें।

निस्सन्देह, विशुद्ध सेवा व परोपकार ही ऐसा कर्म है, जिसे याद करके संसार रोता है और हम खुशी-खुशी यहाँ से विदा होते हैं। काश, हम अपने जीवनों को इस प्रकार जी सकें कि जिससे हमारा मनुष्य जीवन सफल हो, ऐसी है शुभकामना!

- प्रो. नवनीत अरोड़ा

तर जाऊँ मैं जग से

मैं हूँ भिखारी तेरे दर का, तेरी शरण में आया हूँ,
मेरी खाली झोली भर दे, 'कमल' यह हसरत लाया हूँ
हे देव गुरु मुझमें, निज तेज ओज भर दो।
तर जाऊँ मैं जग से, मन प्राण विमल कर दो,

तर जाऊँ मैं जग से.....

सूने मन उपवन में, चहुँ ओर अन्धेरा है,
पग-पग पर जीवन में, दुखड़ों का बसेरा है;
मेरे मन की अमावस को, पूनम की किरण कर दो।

तर जाऊँ मैं जग से.....

मतलब के हैं रिश्ते-नाते, झूठी है ये जग माया,
इन अष्ट कर्मों में फँसकर, मैं जीवन यूँ ही गवायाँ;
सद् राह दिखाकर तुम, जीवन यह सफल कर दो

तर जाऊँ मैं जग से.....

चारों जग के उपकारी, तुम प्रेरक और विकासक हो,
हो ज्ञान प्रकाशक तुम, दुःख द्वन्द्व विनाशक हो;
निज दान की ज्योति से, मेरा जीवन जगमग कर दो।

तर जाऊँ मैं जग से.....

-कमल जैन (रुड़की)

जो मनुष्य आपके बुरे समय में आपका साथ नहीं देता, उसे आपके अच्छे वक्त में भी साथ रहने का कोई अधिकार नहीं है।

मंगलकामना/प्रार्थना

आओ, आज देखें मंगलकामना के असर के बारे में, प्रार्थना के बारे में। देखो, हैरानगी की बात है कि प्रार्थना करना एक विश्वव्यापी विश्वास है। ऐसा नहीं है कि धरती के कुछ ही भागों में लोग इस पर विश्वास करते हों। चाहे तुम दुनिया के किसी भी देश में चले जाओ, वहाँ किसी परमशक्ति में ज़रूर विश्वास होगा और इस बात में विश्वास कि अपनी जिन्दगी की बेहतरी के लिए इस शक्ति से प्रार्थना करनी चाहिए।

जबकि इस विश्वास की बहुत ज़्यादा उपस्थिति है, फिर भी इस बात को, इस अनुभव को साबित करने का कोई भी वैज्ञानिक तरीका नहीं है, जब तक कि इस खोज में विचारों, भावों और अनुभवों को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। यह कोई नामुमकिन काम नहीं है। ज़ल्दी ही वैज्ञानिक वहाँ पहुँच जायेंगे, जहाँ वे तुम्हारे विचारों के नमूनों को रिकॉर्ड करके, तुम्हारे दिमाग के सेल और उनकी हलचल आदि को पढ़ सकें। ज़ल्दी ही वे ऐसे प्रयोग करने का तरीका ढूँढ लेंगे, जिससे कि यह साबित कर सकें कि प्रार्थना का असर होता है।

प्रार्थना का असर हर इन्सान ने ज़्यादातर एक या दूसरे तरीके से देखा हुआ है। पर, जब तक कि कोई मुश्किल या आपातस्थिति या कोई तात्कालिक माँग पूरी न करनी हो, किसी को भी पूरे दिल और लगन से प्रार्थना करने की ज़रूरत महसूस नहीं होती। जब सब कुछ वापस से ठीक हो जाता है, तो प्रार्थना करने की तीव्रता गहराई और क्रम कम होते जाते हैं।

यही अपने आप में यह साबित करता है कि यदि प्रार्थना बड़ी मुश्किलों को हल करने में सहायक होती है, तो निःसन्देह यह छोटी मुश्किलों को भी हल कर सकती है और हर एक के लिए कर सकती है। किसी ऐसे इन्सान के लिए मंगलकामना करना, जो हमसे कोसों दूर रहता हो और सिर्फ़ इसके असर से उसकी मुसीबतों को हल करने में उसकी मदद करना, एक नामुमकिन सा काम लगता है। पर, मंगलकामना के असर की बारे में अधिकतर लोग इसको कम करके आंक रहे हैं।

मंगलकामना एक बहुत ही बलशाली माध्यम है, किसी भी मुश्किल को हल करने के लिए। वह चमत्कार कर सकती है, मगर सिर्फ़ तभी, जब तुम्हें उसमें पूरा विश्वास हो और तुम उसे सिर्फ़ अपना या दूसरों का भला करने के लिए इस्तेमाल करो और तुम अपने आपको पूरी तरह से समर्पित कर दो, मंज़िल तक पहुँचने के लिए।

अगर तुम अपनी परीक्षा में पहला नम्बर आने के लिए प्रार्थना करो और बिलकुल

योग्यता महत्त्वपूर्ण है, किन्तु विश्वास अधिक महत्त्वपूर्ण है।

पढ़ाई न करो, तो ऐसे में यह प्रार्थना तुम्हारी कोई मदद नहीं करेगी। यह सिर्फ़ जो भी तुम खुद कर सकते हो, उसके लिए एक अतिरिक्त मदद की तरह इस्तेमाल की जा सकती है। ज़िन्दगी में कुछ भी पाने के लिए कुछ प्रयास, उत्तरदायित्व, समर्पण (Effort, Responsibility, Dedication) की ज़रूरत होती है। इसके साथ-साथ मंगलकामना एक उत्प्रेरक की तरह होती है, जो तुम्हें तुम्हारी मंज़िल तक पहुँचाने में मदद करती है, चाहे वह मंज़िल कोई भी हो।

तो, इस शक्ति को कभी भी कम मत समझना, यह तुम्हारी या किसी और की कोई भी मुश्किल आसान कर सकती है। यह तुम्हें या किसी और को किसी भी मंज़िल को पाने में मदद कर सकती है, पर सिर्फ़ तभी, जब तुम्हें इस पर पूरा विश्वास हो।

- परलोक सन्देश

संयम से हो समस्या का समाधान

एक बार महात्मा बुद्ध अपने शिष्यों के साथ जंगल से गुज़र रहे थे। धूप तेज़ होने की वजह से वह आराम करने के लिए रुके। उन्हें काफ़ी तेज़ प्यास लगी थी। उन्होंने एक शिष्य से पानी लाने के लिए कहा। शिष्य पानी लाने के लिए चला गया। उसे एक झील दिखी। जैसे ही वह झील से पानी लेने लगा, वहाँ से कुछ जानवर दौड़कर भागने लगे। इससे झील का पानी गंदा हो गया। पानी के तले में बैठा सारा कीचड़ ऊपर आ गया। शिष्य बिना पानी लिए ही लौट आया। उसने अपने गुरु से कहा कि झील का पानी साफ़ नहीं है। मैं कहीं और से पानी लेकर आता हूँ। बुद्ध ने उसे उसी झील का पानी लाने को कहा। शिष्य वहाँ दोबारा गया, लेकिन खाली हाथ लौट आया। उन्होंने उसे फिर भेजा। जब शिष्य वहाँ पहुँचा तो झील बिल्कुल स्वच्छ और शान्त थी। उसने पानी लिया और गुरु के पास पहुँचा। महात्मा बुद्ध ने उसे समझाते हुए कहा कि यही स्थिति हमारे मन की होती है। जीवन की दौड़-भाग मन को विक्षुब्ध कर देती है। यदि कोई शान्ति से उसे बैठा देखता रहे, तो सारा कीचड़ अपने आप नीचे बैठ जाता है। सहज निर्मलता का आगमन हो जाता है। संयम के साथ विचार करने पर किसी भी समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

दूसरों को जानना ज्ञान है, स्वयं को जानना आत्मज्ञान है।

बाज़ के बच्चे का प्रशिक्षण

क्या हम जानते हैं कि एक मादा-बाज (Eagle) अपने नवजात बच्चे को स्वावलम्बी बनाने हेतु कितना कठोर प्रशिक्षण देती है। जीवन की रक्षा तथा विकास के लिये यह कठोर प्रशिक्षण अत्यन्त आवश्यक है।

बाज़ पक्षी जिसे हम ईगल या शाहीन भी कहते हैं, जिस उम्र में बाकी परिन्दों के बच्चे चिचियाना सीखते हैं, उस उम्र में एक मादा बाज़ अपने चूजे को पंजे में दबोच कर सबसे ऊँचा उड़ जाती है। पक्षियों की दुनिया में ऐसी **Tough and tight training** शायद किसी भी और की नहीं होती।

मादा बाज अपने चूजे को लेकर लगभग 12 कि.मी. ऊपर ले जाती है। जितने ऊपर अमूमन जहाज उड़ा करते हैं और वह दूरी तय करने में मादा बाज़ 7 से 9 मिनट का समय लेती है। यहाँ से शुरू होती है, उस नन्हें चूजे की कठिन परीक्षा। उसे अब यहाँ बताया जाएगा कि तू किसलिए पैदा हुआ है? तेरी दुनिया क्या है? तेरी ऊँचाई क्या है? तेरा काम क्या है?

और फिर मादा बाज़ उसे अपने पंजों से छोड़ देती है। धरती की ओर ऊपर से नीचे आते वक़्त लगभग 2 कि.मी. उस चूजे को आभास ही नहीं होता कि उसके साथ क्या हो रहा है।

7 कि.मी. के अन्तराल के आने के बाद उस चूजे के पंख जो कंजाइन से जकड़े होते हैं, वह खुलने लगते हैं। लगभग 9 कि.मी. आने के बाद उनके पंख पूरे खुल जाते हैं। यह जीवन का पहला दौर होता है जब बाज़ का बच्चा पंख फड़फड़ाता है। अब धरती से वह लगभग 3000 मीटर दूर है, लेकिन अभी वह उड़ना नहीं सीख पाया है। अब धरती के बिल्कुल करीब आता है, जहाँ से वह देख सकता है उसके स्वामित्व को।

अब उसकी दूरी धरती से महज 700/800 मीटर होती है, लेकिन उसका पंख अभी इतना मज़बूत नहीं हुआ है कि वो उड़ सके।

धरती से लगभग 400/500 मीटर दूरी पर उसे अब लगता है कि उसके जीवन की शायद अन्तिम यात्रा है। फिर अचानक से एक पंजा उसे आकर अपनी गिरफ्त में लेता है और अपने पंखों के दरमियान समा लेता है।

यह पंजा उसकी माँ का होता है, जो ठीक उसके ऊपर चिपक कर उड़ रही होती है और उसकी यह ट्रेनिंग निरन्तर चलती रहती है, जब तक कि वह उड़ना नहीं सीख जाता।

शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है, हर शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान ही पाता है। शिक्षा सौन्दर्य और यौवन को परास्त कर देती है।

यह ट्रेनिंग एक कमांडो की तरह होती है। तब जाकर दुनिया को एक बाज़ मिलता है, जो अपने से दस गुना अधिक वजनी प्राणी का भी शिकार करता है।

हिन्दी में एक कहावत है--- “बाज़ के बच्चे मुँडेर पर नहीं उड़ते।”

बेशक अपने बच्चों को अपने से चिपका कर रखिए पर उन्हें दुनिया की मुश्किलों से रूबरू कराइए, उन्हें लड़ना सिखाइए। बिना आवश्यकता के भी संघर्ष करना सिखाइए।

यह टीवी के रियलिटी शो और अंग्रेजी स्कूल की बसों ने मिलकर अपने बच्चों को ‘ब्रायलर मुर्गे’ जैसा बना दिया है, जिसके पास मज़बूत टाँगें तो हैं पर वह चल नहीं सकता। वजनदार पंख तो हैं पर उड़ नहीं सकता, क्योंकि गमले के पौधे और जंगल के पौधे में बहुत फ़र्क होता है।

मित्रो! शारीरिक जीवन की तुलना में आध्यात्मिक दृष्टि से तो हमारी स्थिति और भी कहीं अधिक जटिलता लिए हुए है। अर्थात् प्रकृति में हम सबकी स्थिति करो या मरो की है। यदि हम जीवित तथा सुरक्षित रहना चाहते हैं, तो प्रत्येक जीव को स्वावलम्बी बनना पड़ेगा, अन्यथा वह जीवित नहीं रह सकता। प्रकृति के भव्य आध्यात्मिक नियम का भी यही उद्घोष है कि ‘करो या मरो।’

काश! हम सबके शुभ का मार्ग प्रशस्त हो।

फेसबुक से साभार

संकलन-चन्द्रगुप्त (अम्बाला शहर)

पतंग से सीख

पतंग हमें एक शानदान सीख देती है- ऊँचा कितना भी उड़ें, किन्तु धरती पर अपनी जड़ों से जुड़े रहें। अन्यथा, हम खो जायेंगे। आइए, ध्यान रखें कि सफलता के नए से नए मुक़ाम चूमते हुए हम आगे तो बढ़ें, किन्तु हमारे पाँव धरती पर रहें। हम विनम्रता, सहजता व कृतज्ञता जैसे गुणों को न छोड़ें, ताकि सफलताओं से मिलने वाला अहं हमें नष्ट न कर दे।

आप खुश रहोगे, तो आपके दुश्मनों को सजा अपने आप मिल जाती है।

एक सेविका का पत्र

अद्वितीय जीवन व्रतधारी, अद्वितीय महिमा है तुम्हारी परम पूजनीय भगवान् देवात्मा जी आपके श्री चरणों में मुझ तुच्छ का कोटि-कोटि प्रणाम!

प्रकृति के विकासक्रम में, दुनिया को तारने के लिए आपका शुभ आविर्भाव हुआ। प्रकृति ने जब देखा कि मनुष्य घोर महापापी बनता जा रहा है और अपने सम्बन्धों में हानियाँ करता है, चारों जगत्, यथा भौतिक जगत्, वनस्पति जगत्, पशु जगत् व मनुष्य जगत् के लिए यह महाहानिकारक बन रहा है तथा अपनी आत्मा को रोगी बनाता जा रहा है, तो प्रकृति ने अद्वितीय शक्तियों से अलंकृत देवगुरु भगवान् को प्रगट किया। 20 दिसम्बर, सन् 1850 को आपका जन्म श्री अकबरपुर (जिला-कानपुर) में हुआ।

भगवान् देवात्मा, अद्वितीय शक्तियों से सुशोभित, अद्वितीय जीवन लक्ष्य के धारणकर्ता, अद्वितीय त्यागों को करने वाले हैं। प्रकृति माँ ने एक ऐसी अमूल्य कृति मानव जगत् को भेंट की, जिसके सम्पर्क में आने से मनुष्य का जीवन विकसित होने लगता है। मनुष्य अपने नीच जीवन का त्याग करने लगता है व चारों जगत् के लिए हितकारी बन जाता है। किसी ने ऐसा न पहले सुना था, न देखा था, न अनुभव किया था।

भगवान् देवात्मा जी ने विज्ञान में सत्य को खोजकर उसी के अनुसार धर्म की परिभाषा दी, जो मनुष्य को उच्च जीवन देने वाली है। भगवान् ने कितने ही तत्व खोजे हैं, जो मनुष्य की कायापलट कर देते हैं। एक-एक अथाह दुःखों के संसार में गोते खाते हुए इन्सान को एक आलौकिक जीवन के दर्शन कराये, और उसे सारे सुखों का साम्राज्य दे दिया। जबकि खुद उन्होंने सारा जीवन दुःखों, उत्पीड़नों और अजाबों में व्यतीत किया। धन्य हैं ऐसे देवगुरु भगवान्! आप बारम्बार धन्य हैं।

आज रोती तड़पती हुई, बिलबिलाती हुई मानवता ठोकरें खा रही है। अजीब दुःखों से घिरी हुई है। ईर्ष्या, नफरत, द्वेष, मोहमाया, वैभव सांसारिक सुखों के पीछे भागती है, जहाँ चाहे उसे इसकी क्रीमत अपनी आत्मा को पतित करके चुकानी पड़े, वह चुकाती है। भाई-भाई का दुश्मन है, पति पत्नी के सम्बन्धों में नर्क है, अमानत में खयानत है, मनुष्य जीवन राक्षसी जीवन बना हुआ है। जहाँ पशुओं का वध स्वादानुराग के लिए किया जाता है, मनुष्य ने अपने पेट को श्मशान घाट बना लिया है। परिवारों में धन सम्पत्ति को लेकर झगड़े हैं, हत्याएँ हो जाती हैं। स्वार्थ का बोलबाला है। वहाँ केवल आपकी शिक्षा ही बचा सकती है। आपकी विज्ञान मूलक सत्य शिक्षा ही कारगर

एक मनुष्य को कठिनाइयों की ज़रूरत होती है, क्योंकि तभी वह सफलता का आनन्द ले सकता है।

साबित हो सकती है। आपने हमें ऐसे रोगों से मुक्त करने के लिए इस पृथ्वी पर जन्म लिया है। हे देवगुरु भगवान, आपकी महिमा गाई नहीं जा सकती। आपकी महिमा अति महान् है। अवर्णनीय है। आपके देव ज्योति देव तेज से युक्त देवप्रभाव ही इस गिरी हुई मानवता को बचा सकते हैं। हे तारण हारे, आपका महान् रूप संकट हरण है। हे अद्भुत शक्तियों से सुशोभित देवगुरु भगवान् आपको कोटि-कोटि प्रणाम!

हमारे जीवनो को बदलने वाले देवगुरु भगवान् आप बारम्बार धन्य हैं। कैसे रोते बिलखते, एक दूसरे की हानियाँ करने वाले, सैकड़ों नीच गतियों से भरपूर हमारे जीवन को आपने बचाया है और आगे भी आप हमारा और ज़्यादा हित करने के लिए व्याकुल हैं। कैसी हितकर गति है आपकी और हम हैं कि अपने मोह बन्धनों को छोड़ना नहीं चाहते। आपके देवरूप के दर्शन करने व जुड़ने के नियमों का पालन नहीं करते। हे देवगुरु भगवान, हम बहुत दुर्बल हैं, आप महा बलशाली हैं। पूरा संसार एक तरफ और सत्य और शुभ से भरा परिपूर्ण पावन हृदय आपका एक तरफ है। कैसी निराली शान है आपकी! कैसी शक्ति है आपकी! कैसी महानता है आपके अन्दर! जो पूरे विश्व में अन्यत्र दिखाई नहीं देती और आने वाले समय में भी लगता है नहीं होगी। हे! देवगुरु भगवान् आप बारम्बार धन्य हैं। आपने हज़ारों लोगों के दिलों को बदला है। कैसा पावन रूप है आपका कि आप आज देवलोक में बैठकर भी हृदयों को बदलने का पवित्र काम कर रहे हैं। आपने ऐसे-ऐसे कर्मचारी अपने इस पावन मिशन में पैदा किये हैं, जिनके जीवनो में आपके प्रभाव दिखते हैं, जिन्होंने कितने लोगों तक आपकी सत्य शिक्षा पहुँचा कर उनको जीवन दान दिया है। धन्य हैं आप और धन्य हैं आपके सेवक।

हे देवगुरु देवात्मा, मैं आपकी शरण में हूँ, मेरे अन्दर अभी बहुत नीचताएँ हैं, जिन्हें मैं आपसे योग कर के दूर करना चाहती हूँ। मुझे भी आपकी शरण में बैठने का जो सुन्दर महा सौभाग्यशाली अधिकार मिला है, उसे मैं खोना नहीं चाहती हूँ। मुझे अपनी ज्योति व शक्ति दो, जिससे मैं अपने अन्दर के विकारों को दूर करके अपने हृदय को सुन्दर बनाकर परहित भाव से सेवा कर सकूँ! यह दुर्लभ काम आपके श्री चरणों में रहकर आपकी ज्योति और तेज के द्वारा ही हो सकता है। अन्यथा असम्भव है। आप बारम्बार धन्य हैं। आपके श्री चरणों में मुझ तुच्छ का कोटि-कोटि प्रणाम!

जो जन तुमरी शरण में आया। जीवनदान उसी ने पाया ।।

- सुदेश खुराना (लुधियाना)

जब आपको अपने लक्ष्य के अलावा जीवन में कुछ भी दिखाई नहीं देता,
तो आप अपने लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकोगे।

दयालु हृदय

मैं झाँसी से खण्डवा जा रहा था। एक स्टेशन पर हमारे डिब्बे में मुसीबत की मारी तीन बूढ़ी औरतें चढ़ आईं। पाँच-सात सेर जंगली बेरों के सिवा उनके पास और कुछ नहीं था। उनमें एक अन्धी थी। पूछने पर उस अन्धी बुढ़िया ने कहा, “आठ दिन से अन्न का मुँह नहीं देखा है। बेर कूट-कूट कर पेट भर रहे हैं। बुन्देलखण्ड की भंयकर गरीबी का बहुत कम लोगों को पता होगा। जगह-जगह स्त्री पुरुषों के हज़ारों अस्थि कंकाल दिखाई देते थे। औरतों के तन पर सौ-सौ छिद्रों के चीथड़े, सिर पर जंगली बेरों की पोटली, गोद में नंग-धड़ंग दुबले सूखे बालक।

इन तीनों की अत्यन्त दयनीय दशा देख कर भी हममें से किसी को उन पर दया नहीं आई। थोड़ी देर में तेरह-चौदह साल का एक मुसलमान लड़का धीरे से उठा। अपने रुमाल से उसने आठ रोटियाँ खोल कर निकालीं और सारी की सारी उन वृद्धाओं के हाथ में रख दीं। अपने लिए एक टुकड़ा भी न रखा। गरीब औरतें उसे बार-बार आशीष देने लगीं। उस दयालु बालक की भोली आँखों में रहम के आँसू भर आए। मैंने उस बालक से पूछा, “भाई! तुम किसके लड़के हो और कहाँ जा रहे हो? उसने कहा, “मेरा बाप बीना में एक बाबू के यहाँ नौकर है।” मैंने उसके सिर पर हाथ रख कर कहा, “तुम्हारा दया भाव देख कर मुझे बड़ी खुशी है।” नम्रता से उसने सिर नीचा कर लिया।

मोह बन्धन से ऊपर

बंगाल के प्रख्यात नेता सुरेन्द्र नाथ बैनर्जी ने भारतीय स्वाधीनता के लिए जो संग्राम किया था, उसको कौन नहीं जानता? एक दिन सायंकाल कलकत्ते में राजनैतिक सभा होने वाली थी, जिसको उन्होंने ही सम्बोधन करना था। उस दिन प्रातः ही उनके पुत्र का दुःखद निधन हो गया। सभी सोच रहे थे कि शायद आज बैनर्जी सभा में नहीं आएंगे, क्योंकि उन्हें पुत्र शोक का सदमा होगा। लोगों के आश्चर्य की हद न रही, जब उन्होंने देखा कि वह सायंकाल की सभा में ठीक समय पर उपस्थित हुए और उन्होंने सभा को इस अन्दाज़ में सम्बोधित किया मानो कुछ हुआ ही न हो।

जिन लोगों का आप पर भरोसा होता है, वही आपकी ताक़त होती है।

Do Not Waste Food

Food, in whatever form available is essential for all living beings for their survival. That is why food is called “**Brahm.**” It needs to be utilized with utmost care and respect. Our Rishis, Munis and elders have always been advising us not to waste it in any way. Austerity has to be practiced in its consumption. Even medical science advises us not to fill our belly to the full. With a view to respect food, some religious sentiments and traditions were invoked by the elderly ladies. We have been watching that in villages and towns, the great grand-mothers and grand-mothers particularly in the Hindu Sanatan families would first pray to their “Isht Gurus” before preparing meals. The first chapati is baked for the holy cow, similarly during ‘Sharads’ and other functions a little bit of the food item is kept separately for offering to the cows, crows and dogs.

The importance of food, is best known at the time of ‘Akaal’ or ‘Drought’, when there is scarcity of it. Elderly persons like me who have seen the partition of the country, are well aware how people of all walks of life i.e. rich and poor crossing the Pakistan border and entering India were clamouring and begging for something to eat and quench their thirst. It used to be a touching scene. They bear testimony to the fact that ‘Of all the calamities that beset and way lay the life of man, the calamity of hunger is the most, wherein the proudest of us feels no better than the other’. Similar scenes could be seen at the ration shops where people had to stand in long queue waiting for their turn to get few kilograms of Wheat, Atta, Sugar, Dal and Kerosene Oil needed for the family needs.

It is good that our National leaders of the country at that time particularly Pt. Jawahar Lal Nehru, the first Prime Minister of the country, gauging the need of food-grains for the country started planning the construction of “Hydro Electric Dams” with the help of foreign experts. As a result of the same many Dams like Bhakra

वर्तमान का उपयोग करने वाले का ही जीवन सफल होता है।

Nangal Dam etc. and Fertilizers plants were set up in our country. These converted our barren land into fertile one and changed the country's scarcity into huge production of food grains. The farming community became happy and prosperous. At present we have surplus of major food grains, such as wheat, rice and sugar etc.

Unfortunately for the past decade or so, we are hearing many incidents of farmers resorting to suicide due to their inability to repay the loans, taken by them from the Government Co-operative Banks and Co-operative Societies and other such organizations at low rate of interest. Earlier they used to get loans from the "sahukars" i.e. Money lenders at the terms and conditions mutually settled by them.

It will be worthwhile to point out that Sir, Chhotu Ram brought out specific laws to bring them out of the clutches of Big Money Lenders. The mechanization of farming tempted the farmers to get loans from these Banks and societies, as propagated by the government. We noticed that in many cases these small farmers instead of exclusively using the loan for the farming, started misusing it by spending lavishly on the marriages of their wards, purchasing costly vehicles and sending their children abroad for greener pastures in search of more money. This led to the ugly situations. In spite of free water and electricity being made available to them particularly in Northern India, events of drought and vulnerable to vagaries of nature are understandable but resorting to their extreme step of suicide is most pathetic. The main concern of the farming community is that they are not getting remunerative prices of their products in accordance with the recommendations of Swaminathan Commission, which inter-alia envisages the minimum support price to be fixed at one and half time of the cost of production.

India is an agriculturist country, now religious and social organizations, have started raising their voice in favour of farming

Success is achieved through accurate efforts.

community. Keeping in view their tragic position particularly of small farmers. Having remained on deputation with the 'Food Corporation of India' I am aware of the modus-operandi of the employees of the concerned departments and the business-men, nexus which leads to huge losses to the government on account of inadequacy of the storage of food grains, which is allowed to remain, stocked in open plinths, thus exposing to vagaries of nature. Subsequently it is declared unfit for human consumption.

Though recently the Government has substantially increased the M.S.P of some crops , still it is a controvertial matter in the absence of any ready reckoner for all the crops and at all places . Contract farming has not been encouraged . It can provide guarantee to the producer that the whole crop will be purchased by the contractor. He will also try to provide the best technology in order to get good quality, which could bring profitable price to them.

The Government of the day, though trying best to ameliorate the lot of farmers by helping them to have Soil Health Cards and Fasal Bima Yojna etc., still it needs serious deliberations to avoid farmers to resort to this extreme step of suicides. It also enjoins upon every citizen not to waste food in any way, as millions of poor people in this country do not have two square meals a day and sleep with hungry bellies. Let us all try to avoid wastage of food which we find at marriage and other functions. This could be given to poor people and hungry animals and birds who, wander needing something to eat. I hope the reader of this esteemed magazine will also come forward to awaken the countrymen the need of avoiding the wastage of food. The people at the helm of affairs should bear in mind the spirit of this Urdu Couplet.

‘मिलेगी आपके दिल को खुशी जरूर
किसी के पैर का काँटा निकालकर तो देखो ।’

R.L. Bhardwaj Mohali

We can never be happy if we keep on blaming others.

आपने कहा था

(भगवान् देवात्मा की वाणी के अंश)

15 मार्च सन् 1915 ई०

पहले पूजनीय भगवान् ने इन पदों का उच्चारण किया-

विश्व के सकल विभागों में ही उच्च गति प्रद परिवर्तन हो,

नीच गति उनमें चूरण हो, उच्च मेल सब अस्थापन हो।

देवात्मा के मुख्य उद्देश्य

देवात्मा की शक्ति मनुष्यात्माओं को बदल रही है और बदला है। अधिकारी आत्माओं में देवात्मा के प्रभावों को पाकर एक व दूसरी नीच गति के लिए उच्च घृणा पैदा हुई है। कुछ काल के लिए अथवा हमेशा के लिए उनमें उनकी योग्यतानुसार ऐसी उच्च घृणा पैदा हुई है। कितनी ही आत्माओं में एक व दूसरा उच्च भाव भी पैदा हुआ है। एक-एक आत्मा नहीं चाहता कि वह किसी के लिए कुछ करे। परन्तु देवात्मा के प्रभावों ने ऐसे आत्माओं को बदला है। उनका स्वार्थ कुछ न कुछ नष्ट हुआ है। वह औरों के लिए कुछ न कुछ सेवाकारी बने हैं। न चाहकर भी वह बदल गए हैं। वह एक व दूसरा शुभ साधन करने लगे हैं। स्वार्थपरता का जीवन उनको बुरा महसूस हुआ है। यह उन पर देवात्मा की जय है, या यूँ कहो कि देवात्मा के द्वारा विश्व के विकासकारी नियम की जय है।

बेशक कितने ही आत्माओं में एक व दूसरी हद तक एक व दूसरे प्रकार का उच्च परिवर्तन आया है, परन्तु उन आत्माओं में यह आकांक्षा नहीं कि वह अपनी किसी नीच गति से मोक्ष पाने का साधन करें और उसके लिए देवात्मा से जुड़ें। यह सच है कि कई ऐसे जन हैं कि जो किसी अच्छे भाव से काम करते देखे जाते हैं, परन्तु ऐसे आत्मा ज्यादा हैं कि जिनके अन्दर यह आकांक्षा नहीं कि उनका किसी नीच गति और उसको कराने वाली नीच शक्ति से उद्धार हो। इसमें शक नहीं कि उनमें कुछ न कुछ उच्च परिवर्तन जरूर आया है और वह काम भी करते हैं। परन्तु नीच गति उनको आराम देती है। कौन है जो आराम खोवे? इसके अतिरिक्त कोई शुभ भाव प्राप्त करने की भी उनमें आकांक्षा नहीं है। वह एक-एक सुख को लेकर ही उसकी तृप्ति में लगे रहते हैं। कितने ही जन इतने नीच और नारकी होकर और नाना अंगों में अन्धकार ग्रस्त रहकर भी सन्तुष्ट रहते हैं। अब जहाँ मनुष्य की ऐसी अवस्था है कि नीचता से निकलने और उच्च बनने की उसमें आकांक्षा ही नहीं है, तब एक-एक अंग के विचार से कुछ उच्च

जो केवल शिकायतें ही करते हैं, कभी स्वयं कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाते।

परिवर्तन आकर भी उसका आगे का रास्ता बन्द रहता है। मनुष्य नाना अंगों के विचार से रद्दी होकर भी अपनी ऐसी अवस्था से ऊपर जाना नहीं चाहता। कैसी रद्दी हालत! जिनमें कुछ लालसा हुई हो कि हम आकांक्षित उच्च परिवर्तन लाभ करें, वह कैसे मुबारिक। मुबारिक हैं वह आत्मा, जो यह चाहते हैं कि हमारी नीच गति का नीच गति हर्ता को पता हो और वह हमें इससे निकाल लें।

देवात्मा की गहरी व्याकुलता

मेरी यही जोरदार आकांक्षा है और मैं व्याकुल होकर चाहता हूँ कि मुझे ऐसे आत्मा अधिक से अधिक मिलें, जो अपनी किसी नीच गति से मोक्ष और उच्च गति में विकास लाभ करने के सच्चे आकांक्षी हों। मेरा उद्देश्य पूरा हो सके! शुभ हो! हित हो! ऐसे आत्मा पैदा हों, जो मेरे साथ आत्मिक सम्बन्ध को लेकर सच्चे शिष्य बन सकें! वह मुझे अपने हृदय में स्थान दे सकें! उनमें गुरु के लिए आकर्षण अथवा अनुराग पैदा हो! अब विकासालय का सेशन खत्म होता है। यह विचार करने की आवश्यकता है कि अब बाहर जाकर तुम लोग क्या करोगे। पहली बात तो यह है कि तुम बाहर के बुरे असरों से कैसे बचोगे? यदि तुम्हारे भीतर नीच आत्माओं के लिए आकर्षण हैं, उनके प्रति विकर्षण कुछ नहीं महसूस होता, तब तुम्हारे लिए नीचे जाना आवश्यक है। ऐसी संगत तुम किसी की करोगे- किसी बच्चे को स्त्री पुरुष आदि की जो अपने अन्दर से बुरे असर निकाल रहे हैं और यदि तुम बुरे असरों को ग्रहण करने की योग्यता रखते हो तो उनके बुरे असरों को ज़रूर ले लोगे। एक-एक जन को यह सोचने की आवश्यकता है कि मैं जो विकासालय के सेशन के समाप्त होने पर यहाँ से चला हूँ- मैं किसलिए चला हूँ? किसको अपने पास बैठने देता हूँ? किस बात के लिए बैठने देता हूँ? यदि कुछ ज्योति तुम्हें मिली हो तो तुम देख सकोगे कि मेरे गुरु तो देवात्मा होकर भी किसी के साथ इस तरह पर नहीं मिलते बैठते। तुम्हारे भीतर भी यह भाव हो कि किसी को मिलना है तो इसलिए कि उसे उच्च बनावें। चुपचाप बैठकर उसके नीच असर हासिल नहीं करने। यह असूल समझ लो और किसी के बहकाने से मत बहको। इस असूल की पैरवी करो। ऐसा न हो कि तुम अन्धे होकर देवात्मा के जीवन को ही घृणा की दृष्टि से देखने लग जाओ। ऐसा करके तुम अवश्य नष्ट हो जाओगे। नेचर के नियम अटल हैं। हितकर नियमों के विरुद्ध चल कर तुम ज़रूर उनका फल भुगतोगे।

.....क्रमशः

दूसरों पर अपनी असफलता का दोष मढ़ने वाले ज़िन्दगी में
कभी आगे नहीं बढ़ पाते हैं।

देवजीवन की झलक

.....गतांक से आगे

मनुष्य जगत् के सम्बन्ध में - विविध रूप से अपने दया भाव का परिचय देना

14 मार्च 1911 ई. को एक बार एक धनाढ्य जन श्री देवगुरु भगवान् के दर्शनों के लिए आए। उन्होंने उनके पास अपनी आन्तरिक अवस्था का वर्णन किया और बताया कि वाणिज्य के काम में हठात् बहुत बड़े घाटे के आ जाने और उसके बहुत बड़े आघात से उनका दिल तड़प रहा है, और उन्हें दिन और रात बेचैनी रहती है और किसी तरह शान्ति नहीं मिलती। भगवान् ने उन पर धन, सम्पत्ति और सन्तान आदि के मोह में ग्रस्त हो जाने पर मनुष्य को उनके वियोग से जैसे-जैसे महा दारुण कष्ट मिलते हैं, और मोह ग्रस्त होकर उनके आत्मा अपने मुख्य लक्ष्य से भ्रष्ट और अपने हार्दिक कल्याण की ओर से बेसुध और उच्च प्रभावों के ग्रहण करने के अयोग्य हो जाते हैं, उनका संक्षिप्त रूप से वर्णन करने के अनन्तर उनकी अत्यन्त कृपापात्र अवस्था के लिए अपनी गहरी सहानुभूति का प्रकाश किया और अपने उच्च प्रभावों के द्वारा उनके संतप्त हृदय को शान्ति और धैर्य देने की चेष्टा की, जिससे उस धनाढ्य जन ने उस समय उनके ऐसे प्रभावों से कुछ सहारा पाकर उनके लिए अपनी श्रद्धा और कृतज्ञता का बार-बार प्रकाश किया।

निन्तान आवश्यक हाने पर ही किसी के लिए किसी उचित दण्ड की व्यवस्था करना

एक बार श्री देवगुरु भगवान् ने देव समाज के एक कर्मचारी को समाज के महोत्सव के सम्बन्ध में कुछ काम करने के लिए दिया, परन्तु उसने वह काम नियत समय पर पूरा न किया। उन्होंने उसके लिए और समय दिया, परन्तु उसने उसमें भी उसे पूरा न किया। इसी प्रकार कई बार होता गया। ऐसी अवस्था में श्री देवगुरु ने उसकी इन क्रियाओं से अत्यन्त व्यथित होकर उसे फिर कहा कि देखो, अमुक समय तक उसका पूरा हो जाना आवश्यक है और उसमें अब और देरी करने की कुछ भी गुन्जाइश नहीं है, इस पर भी उसने उसकी ओर यथेष्ट ध्यान न दिया। तब श्री देवगुरु भगवान् को उसकी इन लगातार की नीच क्रियाओं से इतना आघात पहुँचा कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता। उनका दिल इस महा आघात से कमजोर होकर बार-बार डूबने लगा, उनके हृदय में अत्यन्त बेचैनी और घबराहट पैदा हो गई। रात के समय वह बिस्तरे पर पड़े हुए तड़पते रहे। इसी महा कष्ट की अवस्था में यह सोचकर कि जो जन अपनी ओर

इतने मज़बूत बनिए, कि कोई भी छोटी-छोटी बातें
आपको प्रभावित न कर सकें।

से उन्हें इतना बड़ा आघात और दुःख पहुँचाकर भी अपनी नीचता के लिए कुछ क्लेश अनुभव नहीं करता, उसके साथ इस अनमेल की अवस्था में उत्सव में योग देना असम्भव है, उन्होंने आधी रात के समय उसे अपने पास बुलाकर बहुत दुःख के साथ यह आज्ञा दी कि वह सूर्योदय से पहले-पहले देवाश्रम को छोड़ दे और कर्मचारी के पद से अपने आपको स्थगित समझे। इस दण्ड की अवस्था में जब उसने कुछ काल तक बाहर और एकान्त में रहकर अपनी अवज्ञा के विषय में विचार आदि के द्वारा आन्तरिक बोध और क्लेश अनुभव किया, और अपने अपराध के लिए दुःखी होकर उनसे क्षमा प्रार्थना की, तब उन्होंने फिर उसे आश्रम में रहने की आज्ञा दी।

एक बार जब देव समाज के तीन कर्मचारी अपने नियत समय पर श्री देवगुरु भगवान् के समीप न पहुँचे, और वह बहुत देर तक उनकी प्रतीक्षा करते रहे, तब उन्हें उनकी इस नीच क्रिया से बहुत बड़ा आघात लगा, और उन्होंने उनकी इस दशा से बहुत कष्ट अनुभव किया। फिर जब कितनी देर के बाद वह लोग उनके पास पहुँचे, तब उन्होंने उनकी इस बहुत बुरी क्रिया के सम्बन्ध में अपने बहुत गहरे दुःख और अपनी बहुत बड़ी घृणा का प्रकाश किया। अगले दिन एक व्रत सम्बन्धी सभा में (जिसमें योग देने के लिए बाहर से भी कई सेवक और श्रद्धालु आए हुए थे) उन्होंने उनकी इस अवज्ञा और उसके बुरे फलों को सबके सम्मुख प्रकट किया और उन अपराधियों को उचित शास्ति देने के लिए उन्हें उस सभा में बैठने की आज्ञा न दी।

अपने एक प्रचारक की पत्नी की आरोग्यता पर उसके चिकित्सक के प्रति कृतज्ञता का प्रकाश

सन् 1912 ई. में देव समाज धर्म विकासालय के (उस समय के) अध्यापक श्रीमान् मुन्शीराम जी की पत्नी अपनी जुबान पर 'कैंसर' के रोग से अत्यन्त कष्ट पा रही थीं। उन्हें लाहौर के मैयो हस्पताल में रखकर वहाँ के विख्यात डॉक्टर कर्नेल ह्यूगो साहब के द्वारा उसका दो बार ऑपरेशन कराया गया, अर्थात् रोगी की जिह्वा कटवाई गई। फिर ज़ख्म के भर जाने पर ऐसा प्रतीत हुआ कि यद्यपि जुबान के कट जाने से वह बोलने के योग्य नहीं रहीं, तथापि उस सांघातिक रोग से उनकी जान बच गई है। उनके इस कठिन रोग के दूर हो जाने की ख़ुशी और डॉक्टर साहब के लिए कृतज्ञता के प्रकाश में भगवान् ने अपनी ओर से उनकी सेवा में अंग्रेजी में जो पत्र भेजा वह यह था-

क्रमशः.....

वर्तमान को बर्बाद करने का मतलब खुद को कमज़ोर बनाना।

पति के नाम दलजीत कुमारी जी का पत्र

प्रिय मित्रो! देव समाज को बहुत समय पहले ज़रायम-पेशा दो सांसी बस्तियों को सुधारने के लिए उस समय की अंग्रेज़ सरकार ने नैतिक एवं आध्यात्मिक काम सौंपा था। उनके लिए समाज ने स्कूल भी खोले थे। वहाँ सांसियों के बच्चे शिक्षा भी पाते रहे। एक सांसी कन्या 'राम रक्खी' उर्फ दलजीत कुमारी शिक्षा भी पाती रही तथा विज्ञान मूलक सत्य धर्म का सत्यज्ञान भी लाभ करती रही। बाद में उस कन्या के साथ देवात्मा के एक ऊँची जाति के शिष्य ने समाज सुधार हेतु सब परिवार वालों के कड़े विरोध के बावजूद शादी भी की थी। लेकिन दुर्भाग्यवश उनको एक सांघातिक रोग ने घेर लिया तथा शादी के प्रायः 4 मास के पश्चात् उनका देहान्त हो गया। इस सांसी कौम की कन्या ने अपने बीमार पति की सेवा में जो अति मार्मिक पत्र लिखा, आपके शुभ को सम्मुख रखकर आपकी सेवा में नीचे उद्धृत कर रहा हूँ। काश! हम सबके शुभ का मार्ग प्रशस्त हो!

फिरोज़पुर 22 अप्रैल, 1931

मेरे सिर के सरताज, दासी का प्रणाम स्वीकार करें!

मैं कुशलपूर्वक हूँ। आपकी सदा दीर्घ आयु चाहती हूँ। लाहौर से सनावर पहुँचकर आपके स्वास्थ्य में अवश्य सुधार आ रहा होगा। आप पहले से अवश्य ठीक होने की तरफ पग उठा रहे होंगे। आप मेरे विषय में किसी प्रकार की चिन्ता न करें। आपको अन्य किसी प्रकार की चिन्ता में भी न पड़ना चाहिए, जिससे आपके स्वास्थ्य में सुधार आने में विघ्न पड़ता है। मैं ऐसी शुभकामनाएँ करती रहती हूँ कि काश! उच्च शक्तियाँ ऐसी सहायता करें, आप शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करें तथा अपने हृदय की पवित्र उम्मंगों तथा शुभ कामनाओं को पूरा करने का अवसर पा सकें। मैं तुच्छ दासी भी आपकी शुभ इच्छाओं के अनुसार आपकी सहायक बनकर आपकी प्रसन्ता का कारण बन सकूँ।

मेरे सम्मान के योग्य प्रियतम जी! आपको इन हालात में से गुज़रते देखकर मेरे दिल में यह आकांक्षा पैदा होती रहती है, मैं आपकी सेवा में विनती करूँ तथा जानने का प्रयास करूँ कि मेरे विषय में आपकी क्या-क्या शुभ आकांक्षाएँ हैं। लेकिन मुझे हिम्मत नहीं हुई कि मैं आपको लिखूँ। मैं विचार करती रहती हूँ कि आपके हृदय पर निराशा डालने वाला कोई प्रभाव न पड़ जाए। आखिर दिल को चीरकर लिखने लगी हूँ कि कहीं हम दोनों को जुदा ही न होना पड़ जाए, इसलिए आपकी शुभ इच्छाओं से

गलतियाँ हमेशा क्षमा की जा सकती हैं, यदि आपके पास
उन्हें स्वीकारने का साहस हो।

मैं अवगत तो हो जाऊँ। कृपा करके आप अपने हाथों से लिखें या लिखवाकर अपने हस्ताक्षर करने की कृपा करके सूचित करें कि -

आपकी मुझ तुच्छ के सम्बन्ध में क्या-क्या शुभ इच्छाएँ हैं?

आप अपने देश, जाति, समाज तथा जीवनदाता भगवान् देवात्मा के मिशन में सेवाकारी होने हेतु क्या-क्या भाव रखते हैं तथा किस-किस पक्ष में आप क्या-क्या सेवाएँ करने की इच्छा रखते हैं?

मैं चाहती हूँ कि मैं आपके हृदय की पवित्र आकांक्षाओं को पूरा करने में अपनी तुच्छ शक्तियाँ लगाती हुई इस दुनिया से कूच कर सकूँ।

मेरे सरताज! मेरी यह गहरी इच्छा है कि मैं अपने हाथों से आपकी कुछ सेवा करने का अवसर पा सकूँ। लेकिन इस बात से कुछ तसल्ली कर लेती हूँ कि यहाँ भी आपकी इच्छा के अनुसार ही ठहरी हुई हूँ। काश! आप शीघ्र स्वस्थ होकर अपने देश, अपनी समाज तथा अपने हितकारियों के उपकारों का कुछ ऋण-परिशोध कर सकें तथा मैं तुच्छ भी इसमें आपकी साथी बन सकूँ।

आपकी तुच्छ- दलजीत

भारत के सपूत ठक्कर बापा

गोपाल कृष्ण गोखले ने भारत सेवक समाज की स्थापना की थी। बम्बई नगरपालिका के एक इन्जीनियर उसमें अपना जीवन भेंट करना चाहते थे। उन्होंने एक जन की माफ़त गोखले जी को एक पत्र लिखवाया कि यदि उन्हें भारत सेवक समाज में भर्ती कर लिया जाए, तो वह नगरपालिका से इस्तीफ़ा दे देंगे। गोखले जी बड़े पारखी थे। वह ठोक बजा कर किसी को अपनी संस्था में भर्ती करते थे। उन्होंने पत्र का उत्तर दिया कि पहले नगरपालिका से इस्तीफ़ा दें, फिर उनके प्रार्थना पत्र पर विचार किया जाएगा। ऐसा करने से उस इन्जीनियर की सच्चे देश सेवा के भाव की परीक्षा हो जानी थी। गोखले जी का सन्देश पाकर उस जन ने फ़ौरन नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया। तत्पश्चात् उनके प्रार्थना पत्र पर विचार करके उन्हें भारत सेवक समाज की संस्था में ग्रहण कर लिया गया। यह नौजवान इन्जीनियर अमृत लाल विट्ठल दास ठक्कर थे, जिन्हें सारा भारतवर्ष ठक्कर बापा के नाम से जानता है।

ज़ल्दी गुस्सा करना ज़ल्द ही आपको मूर्ख साबित कर देगा।

हृदय रोग कब व मुक्ति कैसे?

हृदय रोग का नाम सुनते ही मनुष्य का मन भय, शंका, चिन्ता व परेशानी आदि में फंस जाता है। उसे यह लगने लगता है कि कहीं जल्दी ही इस जीवन की समाप्ति न हो जाये। हार्टफेल बातचीत करते-करते, अखवार पढ़ते-पढ़ते, सोते-सोते, लैट्रिन, बैठे-बैठे व स्नान करते-करते हो सकता है रोगी मृत्यु को प्राप्त हो सकता है।

इसी कारण हृदय रोग में हमेशा धीरज, विश्वास व आत्मबल की सम्पूर्ण या आंशिक कमी पाई जाती है। चिकित्सक यह बात ठीक प्रकार से जानते हैं कि रोगी के मन को मजबूत करना ही उसकी चिकित्सा की नींव है। यदि रोगी का मनोबल कम हो जाए तो ठीक नहीं हो सकता। जो रोगी मनोबल को मजबूत रखता है, वह जल्दी ही स्वस्थ हो जाता है। कमजोर मन वाले रोगी की अवस्था दिन प्रतिदिन गिरती जाती है। मन व हृदय का बहुत नज़दीक का सम्बन्ध है। इस रोग से भयभीत होने की ज़रूरत नहीं है। मनुष्य अपने आपको बनाये रखे, तो कभी भी आकस्मिक मृत्यु का कारण नहीं बन सकता। परन्तु मनुष्य को भय, चिन्ता, ईर्ष्या से मुक्त रहना होगा। आजकल यह रोग बहुत कम आयु में हो जाता है, क्योंकि आज का मनुष्य खान पान व रहन सहन की परवाह नहीं करता। केवल पैसा कमाना ही अपना उद्देश्य समझता है। मानसिक चिन्तन हमेशा बना रहना ही हृदय रोग का विशेष कारण बन जाता है। जब मनुष्य छोटी मोटी बीमारियों से ग्रस्त हो जाता है और उन्हें दूर करने के लिए प्रकृति के नियमों को छोड़कर गलत तरीके से दवाइयाँ खाकर स्वस्थ होना चाहता है तो वह और भी अधिक रोग पैदा करने की तरफ बढ़ता है। जब हम काफ़ी समय तक प्रकृति के नियमों की अवहेलना करते हैं, तो हृदय रोग जैसी बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। मनुष्य के खाने में तली वस्तुओं अण्डे व माँस आदि के खाने से ब्लड कोलेस्ट्रॉल में वृद्धि होती है, जिससे खून गाढ़ा होकर धमनियों पर जम जाता है और सांस लेने में कठिनाई होती है।

हृदय रोग का कारण कब्ज, गैस, अपच भोजन का असन्तुलन, समय पर न सोना, समय पर न जागना तो है ही, हम जब सैर भी नहीं करते तो रक्त का संचार जिस गति से होना चाहिए, वह भी नहीं हो पाता। हमारे रक्त को शुद्ध करने का विशेष आधार ही जब ठीक नहीं होता, तो बीमारी होना स्वाभाविक ही है। हमारा रक्त वायु के संसर्ग से हो शुद्ध होता है। हमारा रक्त शुद्ध रहे इसका विशेष ध्यान हम नहीं रखते और हमारे शरीर में ऑक्सीजन पहुँचने की कमी रहती है, क्योंकि हम उस प्रकार के कार्य नहीं करते, जिसमें हमें आक्सीजन पूरी मिल सके।

कोई व्यक्ति अपने कार्यों से महान् होता है, अपने जन्म से नहीं।

आजकल शहरों का वातावरण कोलाहलपूर्ण है व कल-कारखानों का धुँआ व जहरीली गैस से दूषित रहता है। जिसके कारण श्वास में जाने वाली गन्दगी हमें रोग से आक्रान्त करती है। आजकल शहरों में घनी व अधिक आबादी, घरों में चका चौंध का वातावरण व अशान्ति सभी इस रोग के कारण हैं। घरों में आपसी तनाव व विचारों का मतभेद, टेलिवीजन, सिनेमा आदि इस रोग में विशेष कारण हैं। घरों में भोजन की सभी वस्तुएं विशेष रूप से तैयार की जाती हैं। उनमें से जो वस्तुएं प्रयोग की जाती हैं, वह सभी हमारे स्वास्थ्य के घातक हैं। आजकल जो पानी अक्सर पीते हैं, वह भी शुद्ध नहीं। दिन में पानी पीया ही नहीं जाता, उसके स्थान पर काफी व चाय अधिक मात्रा में जाती है। जिसके कारण अनेक प्रकार की बीमारियाँ आ घेरती हैं। आजकल कब्ज, गैस अधिक लोगों को होने लगा है, क्योंकि पानी नहीं पीना, सब्जी तली भुनी होना, आटे में चौंकर का न रहना, डालडा, मसालों आदि का अधिक रहना, श्रम बिल्कुल न करना, आदि हमारी जीवनशैली का अंग हैं। घरों में बहनों को पहले चक्की चलाना, दूध बिलौना, कपड़े धोना आदि कार्य रहते थे, वह भी अब न के बराबर हैं।

जब हम प्रकृति से दूर भागते चले आ रहे हैं, तो नए रोगों को जन्म देंगे ही। यदि हम इस रोग से बचना चाहते हैं, तो अपने में रहन-सहन व खानपान में सुधार करें। वजन न बढ़े, इस बात का ध्यान रखें।

इस रोग में घबराहट, छाती में दर्द, बाजुओं में दर्द, पसीना आना, बदन टूटना, बैचेनी होना, साँस में रुकावट महसूस करना आदि पैदा होता है। यह रोग जिन्हें मोटापा, हाईब्लड प्रेशर होता है, उनको जल्दी परेशान करता है। यह रोग मदिरा पान, तम्बाकू, सिगरेट व नशीली वस्तुओं के प्रयोग से भी होता देखा गया है। विजातीय द्रव शरीर में अधिक मात्रा में पैदा होने से भी यह रोग होता है। हृदय के रोगी को कॉफी, चाय, तम्बाकू, शराब इन सबका सेवन नहीं करना चाहिये। मिर्च, नमक, मसाले, तामसी आहार नहीं लेना चाहिये। भोजन हल्का व सुपाच्य हो इसका ध्यान रहे। अनाज कम लें, कभी-कभी रसाहार, फलाहार व उपवास भी करना चाहिये। सब्जियों का सूप व तरकारी ज़्यादा खायें।

प्राकृतिक उपचार: एनीमा, जलनेती, कटिस्नान, मालिश, स्पाईनल टब, मेहन स्नान, मिट्टी-पट्टी, गर्म ठण्डा सैक, पेट व छाती की लपेट, हौटफट रीढ़ की मालिश, धूप स्नान आदि अति लाभदायक है। प्राणायाम शक्ति के अनुसार धीरे-धीरे

संघर्ष के बिना मिली सफलता को संभालना बड़ा मुश्किल होता है।

आसन, श्वासन, पश्चिमोत्तासन में भुजंगासन जरूर करना चाहिये। खाना खाने के बाद 8 सांस दाईं करवट, 16 सांस बायीं करवट और 32 सांस सीधे होकर लेनी चाहिये। इस रोग के रोगी को आराम करना अति आवश्यक है।

हृदय रोगी का आहार

प्रातः 5 बजे उठना। उसके बाद ताजा पानी या शहद पानी लेना, लैट्रिन दातुन निवृत होकर सैर करना (लम्बे-लम्बे सांस लें) घास पर नंगें पाँव चले। आँवला पानी पीना या ताँबे के बर्तन का पानी पियें।

प्रातः 6:30 बजे: हल्का आसन शक्ति के अनुसार करें। प्राणायाम करें।

प्रातः 8:00 बजे: गाय का दूध 300 ग्राम या फल रस 300 ग्राम या मट्ठा 300 ग्राम तथा मुनक्का 12 दाने, अंजीर 2 दाने, रात को भिगोया हुआ लें या अंकुरित अनाज (मौसम अनुसार) लें।

प्रातः 11:30 बजे: रोटी, सब्जी, मट्ठा, सलाद।

दोपहर 3:00 बजे: 1/2 नींबू, शहद, पानी या फल रस या गाजर रस आदि।

सायं 7:00 बजे: दूध, फल या सब्जी, फल या केवल फल साथ में 5 खजूर या किशमिश 10 दाने।

रात्रि 9:00 बजे: दूध का पीना आवश्यकता अनुसार, पानी जरूर पीयें, भोजन से आधा घण्टा पहले या एक घण्टा बाद।

इस रोग से घबरायें नहीं। मनोबल को मजबूत रखें। चिन्ता से दूर रहें। मन में इस बात का चिन्तन करें, मैं बीमार नहीं हूँ, मैं ठीक हो जाऊँगा। यदि कोई दिक्कत है भी, तो मैं ठीक होकर रहूँगा। कुदरत मेरे साथ है, सहायकारी शक्तियाँ मेरी मदद कर रही हैं।

- डॉ. सुमेर चन्द गुप्ता

स्वस्थ शरीर व स्वच्छ मन एवं अच्छे विचारों का संगम होने पर ही मनुष्य हर प्रकार की कठिनाइयों एवं कमजोरियों से विजय पा सकता है।

दूसरों के भरोसे ज़िन्दगी जीने वाले हमेशा दुःखी रहते हैं।

सकारात्मक जीवन जीना ज़रूरी

एक दिन कॉलेज में एक प्रोफेसर ने कक्षा में प्रवेश किया और अपने सभी स्टूडेंट्स से कहा कि आज एक सरप्राइज टेस्ट होगा। सभी छात्र अचानक से टेस्ट की बात सुनकर घबरा गये। प्रोफेसर ने सभी छात्रों को प्रश्न पत्र सौंप दिया और उसके बाद एग्जाम शुरू करने के लिए कहा। प्रश्न पत्र देखकर हर छात्र के चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे क्योंकि प्रश्न पत्र में एक भी प्रश्न नहीं था। पृष्ठ के केन्द्र में सिर्फ एक ब्लैक डॉट था। प्रोफेसर ने सभी के चेहरे पर हैरानी और उलझन के भाव देखे और उन्हें कहा, “मैं चाहता हूँ कि आप अपने जवाब में उस चीज़ के बारे में लिखें जिसे आप प्रश्न पत्र में देख पा रहे हैं” उलझन में सभी छात्रों ने एक असाधारण कार्य शुरू किया। समय समाप्त होने पर, प्रोफेसर ने सभी छात्रों के उत्तर पत्रों को ले लिया और उन्हें एक-एक करके सभी छात्रों के सामने ज़ोर से पढ़ना शुरू कर दिया। सभी छात्रों ने अपने-अपने उत्तर में दिये गये काले बिन्दु को वर्णित किया हुआ था।

सभी के उत्तर पढ़ने के बाद कक्षा एकदम शान्त थी। प्रोफेसर ने कहा, “मैं आपको इस एग्जाम में कोई ग्रेड या नम्बर देने नहीं जा रहा हूँ। मैं इसके ज़रिये आपको सोचने के लिए कुछ देना चाहता हूँ। आप सभी में से किसी ने भी प्रश्न पत्र के सफेद भाग के बारे में नहीं लिखा, हर किसी ने उस ब्लैक डॉट पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किया है। क्या आप जानते हैं कि आपने ऐसा क्यों किया है? क्योंकि अक्सर हमारे जीवन में भी ऐसा ही होता है। हम सभी की ज़िन्दगी में कई श्वेत पत्र हैं जो हमें आनन्द देते हैं, लेकिन हम इन्सानों का ध्यान डार्क स्पॉट्स पर ही केन्द्रित रहता है। यह डार्क स्पॉट्स एक बड़े सफ़ेद कागज़ की बहुत छोटी काली बिन्दुएँ हैं जो हमें दुःख, लालच, गुस्सा और ईर्ष्या देती हैं। ज़िन्दगी में कई बार हम अपने दोस्तों या परिवार वालों के साथ बिताये गये अच्छे पलों को भुला देते हैं जो सफ़ेद कागज़ का प्रतीक हैं और छोटे-छोटे मन मुटावों को पकड़ कर बैठ जाते हैं जिससे सालों के बनाये गये रिश्ते एकदम टूट जाते हैं। यह सफ़ेद कागज़ की छोटी-छोटी काली बिन्दुओं के समान हैं।

ज़िन्दगी आसान नहीं होती, इसे आसान बनाना पड़ता है।
कुछ अंदाज़ से, कुछ नज़र अंदाज़ से

सुखी जीवन जीने के लिए आत्मनिर्भर बनना आवश्यक है।

भाव प्रकाश (महाशिविर 2018)

आज यहाँ से जुड़ने का सौभाग्य मिला। आज से मेरा नया जीवन शुरू हुआ है। मैं आज बहुत खुश हूँ। काश, औरों तक यह सन्देश पहुँचा सकूँ।

- बलदेव राज (सहारनपुर)

महाशिविर में आकर नई ऊर्जा पाई है। अपनी कमियों को दूर करने हेतु रोशनी मिलती रही है। बच्चों को जुड़ने का मौका मिला, इसकी विशेष खुशी है। भगवन की कृपा से परिवार की भलाई का रास्ता खुल सके, यही कामना करता हूँ

- प्रकाश चन्द्र अरोड़ा (चौंदा, संगरूर)

श्रीमान् शादीलाल जी की बदौलत गुरु महाराज के दर का पता लगा। वक्त व हालात के कारण दूर हो गया, शिक्षा को भूल न सका। जीवन एक निर्जीव सूखे पेड़ की तरह हो गया था, जिसकी जड़ें तक भी सूख गई थीं, मगर श्रीमान् जवाहर लाल जी इसे सींचने की कोशिश करते रहे। इस सूखे पेड़ में गुरु कृपा से जान पड़नी शुरू हो गई है। श्रीमान् नवनीत जी भी प्रयास रत रहे, अब सूखे पेड़ की जड़ों में कोंपल फूटी हैं, मैं यहाँ आप सबके साथ हूँ। बहुत अच्छा लगा यहाँ का माहौल। सोच से कहीं ज़्यादा अच्छा। कश्मीर को धरती का स्वर्ग कहा जाता है भौतिक लिहाज से। मगर यहाँ आत्माओं के लिए स्वर्ग है। गुरु की कृपा बनी रहे।

तुच्छ याचक- सुरेश मित्तल (मोगा)

सभाओं में उपकरी याद आते रहे। काश मैं सेवाकारी बन सकूँ। मुझे सहनशीलता का भाव आवे।

- शिमलावती (भायला, यू.पी.)

यहाँ पर आकर देव प्रभाव पाना अपना सौभाग्य बोध करता हूँ। यहाँ सभी एक परिवार की तरह मिलते हैं। मैं आलस्य अनुराग से निकलने का प्रयास करूँगा। माता-पिता का धन्यवाद करता हूँ जो ऐसे वातावरण में बार-बार ले आते हैं।

- अर्पित सिंघल (फरीदाबाद)

स्वयं को प्यार करना है, यह बात यहाँ सीखी है। खुद को प्यार करने वाला अपनी हानि नहीं कर सकता।

- वंशिका (तिसंग)

विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला कोई विद्यालय
आज तक नहीं खुला

यहाँ मेरा सोया हुआ आत्मा झंझोड़ा गया है। नई उमंगें पैदा होती रही हैं। स्वयं में मस्त न रहकर शरीर से सेवा निकालूँगी। उन धर्म सम्बन्धियों का शुभ हो, जो भगवान् के कारज को बढ़ाने में लगे हुए हैं।

- उर्मिल सैनी (पंचकूला)

शिविर से बेहद लाभ मिला। सबके प्रति सम्मान का भाव बढ़ा। गरीबों के लिए सेवाकारी बनूँगी। सम्बन्धों का महत्त्व अधिक समझ में आया। ग़लत राह से बचकर रहुँगी एवं दूसरों की भी सही राह में चलने में मदद करूँगी।

- मनीषा शर्मा (लांझणी, कांगड़ा)

महाशिविर का माहौल दिल को छू गया।

- लीलाधर (संगरूर)

इस महाशिविर तीन नए जनों को साथ लाने का सौभाग्य मिला। एक जन को सेवकी का सौभाग्य मिला। हमारे क्षेत्र में प्रचार वाहन जब आयेगा, तो समय दान दूँगा।

- डॉ. काशी राम (बल्लभगढ़, फरीदाबाद)

लगातार यहाँ आने की प्रेरणा न मिलती, तो शायद न आ पाता। न आकर नुक़सान मेरा ही होता। अपने गुस्से पर नियन्त्रण का संकल्प लेकर जा रहा हूँ।

- भारत भूषण सैनी (नारायणगढ़)

मुझे यहाँ आकर इतनी खुशी मिली है कि मन में नहीं समा रही। जो दान मिला, अनुभूति हुई, भगवन का सानिध्य मिला, वो तो वही जान सकता है, जो यहाँ आकर इन प्रभावों में गोते लगाता है। अपने जीवन को और अधिक सेवा व परहित में लगाना है, यह पक्का इरादा किया है, जीवन की बुनियाद को पक्का करना है, ताकि परलोक में पछताना न पड़े।

- अशोक कुमारी (अम्बाला शहर)

जो लाभ उठाया है, उसका वर्णन करना सम्भव नहीं है। हर पक्ष में भला हुआ है। यहाँ आकर उच्च बनने की इच्छा मज़बूत होती है। काश, सारी मानवता सत्य व शुभ अनुरागी देवात्मा को समझ सके, जिससे चारों जगत्तों का शुभ हो।

- सुदेश खुराना (लुधियाना)

सफलता में दोषों को मिटाने की विलक्षण शक्ति है।

भगवन् की बड़ी कृपा है, सूक्ष्म से संभाल रखा है, अन्यथा क्या हृष्ट होता, उसकी कल्पना भी कठिन है। देवप्रभावों की गंगा बही है, उसका क्या मोल दिया जा सकता है। आत्मा की खुराक हैं यह प्रभाव। भगवन् मुफ्त देते हैं, धन्य हैं भगवन। कितने सौभाग्यवान हैं, जो डुबकी लगा पाते हैं। भगवान के देवरूप पर, उनके मिशन की जय पर विश्वास बढ़ा है। उनकी कृपा को पाने के नियम पूरा हम सभी करते रह सकें, ऐसी हैं शुभकामना!

- नवनीत अरोड़ा (रुड़की)

शोक समाचार

❖ शोक का विषय है कि प्रायः 10 वर्ष से हमारी पत्रिका को टाइप करने वाले सेवाकारी श्री प्रमोद कुलश्रेष्ठ जी के माननीय माता श्रीमती शारदा देवी जी का प्रायः 79 वर्ष की आयु में 18 जनवरी 2018 को रुड़की में देहान्त हो गया। उनका परलोक में शुभ हो! 28 जनवरी को उनके निवास पर डॉ. नवनीत जी ने श्राद्ध सभा करवायी एवं शुभकामना की। प्रायः 40 जन लाभान्वित हुए। इस अवसर पर अटल सत्य की प्रतियाँ भी उपस्थित जनों में वितरित की गईं।

❖ शोक का विषय है कि हमारी पत्रिका के सुहृदय पाठक व मिशन के सहयोगी श्री पी.सी. गुप्ता जी, रुड़की का प्रायः 91 वर्ष की आयु में 23 जनवरी 2019 को देहान्त हो गया। आप स्थानीय के.एल. पॉलिटिकल में प्रोफेसर रहे। अपने सेवाभावी, दानी, सरल भाव के कारण शहर के गणमान्य व्यक्ति रहे। आपके सम्बन्ध में 04 फरवरी को श्राद्ध सभा की गई, जिसमें डॉ. नवनीत जी ने उद्बोधन दिया तथा सामूहिक शुभकामना करवायी। इस अवसर पर उपस्थित लोगों में 'अटल सत्य' नामक पुस्तिका की प्रतियाँ वितरित की गईं। परिवार की ओर से 5000 रुपये दान स्वरूप मिले। आपका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो!

❖ शोक का विषय है कि हमारी वयोवृद्धा साथी सेविका श्रीमती रक्षा मंगला जी का पटियाला में प्रायः 84 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आप भगवान देवात्मा श्रद्धावान्, शिक्षाविद् एवं सेवाभावी महिला थीं। आपका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो!

निराशा सम्भव को असम्भव बना देती है।

प्रेरणास्पद उद्बोधन सेवा

जनवरी 2019 में डॉ. नवनीत जी अरोड़ा अपने प्रेरणास्पद उद्बोधनों के द्वारा निम्न प्रकार से सेवाकारी प्रमाणित हुए -

❖ चण्डीगढ़ में 11 जनवरी को Punjab University में UIET (University Institute of Engineering and Technology) के विद्यार्थियों को उद्बोधन दिया। विषय- जीवन का उद्देश्य क्या है?

❖ 14 जनवरी को Chandigarh Group of Colleges, Village Landran में प्रातः 11 बजे Engineering के विद्यार्थियों को उद्बोधन दिया। विषय- जीवन का उद्देश्य। प्रायः 110 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

उसी दिन दोपहर 2 बजे Chandigarh University (चण्डीगढ़ से प्रायः 24 कि.मी. दूर) में Engineering के विद्यार्थियों को उद्बोधन दिया। विषय- Tips to Success प्रायः 80 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

तदुपरान्त Engineering के प्रायः 30 अध्यापकों को उद्बोधन दिया।

उसी दिन सायं चण्डीगढ़ में सेक्टर- 50 स्थित श्री दर्शन सिंह जी के निवास पर साधन करवाया। विषय- दुःखों का कारण व निवारण। श्री धर्मसिंह जी चौहान ने सभापति जी का भावपूर्ण परिचय करवाया। साधन में अच्छा वातावरण बना। पंचकूला से काफ़ी धर्म सम्बन्धी तशरीफ़ लाए। प्रायः 45 जन लाभान्वित हुए।

❖ 20 जनवरी को मान सरोवर गार्डन, नई दिल्ली में श्री अनिल मेघा अचन्तानी के निवास पर मकान के जीर्णोद्धार के अवसर पर एक साधन का आयोजन किया गया। डॉ. नवनीत जी ने 'दूसरों को खुश कैसे रखें?' विषय पर प्रभावशाली उद्बोधन दिया। प्रायः 40 जन लाभान्वित हुए। परिवार की ओर शुभकामनाओं का स्टीकर लगाकर कृतज्ञता, हे धन, अटल सत्य आदि पुस्तिकाएँ भेंट की गईं। परिवार की ओर से 4000 दानस्वरूप मिले। श्री सुरेश अचन्तानी जी ने अपने पारिवारिक जनों, मित्रों एवं ग्राहकों को बाँटने हेतु कृतज्ञता, हे धन व Gratitude आदि की 200 पुस्तिकाएँ खरीद कीं।

❖ 21 जनवरी को विजयवाड़ा, आन्ध्रप्रदेश के निकट SRM University, AP, अमरावती के परिसर में अध्यापकों को मानवीय मूल्यों के लिए जीने हेतु प्रेरणास्पद उद्बोधन दिया। डॉ. नवनीत जी यहाँ Selection Committee में Expert के रूप में गए हुए थे।

अन्याय में सहयोग देना, अन्याय करने के ही समान है।

❖ 26 जनवरी को रुड़की में स्थित डिवाइन स्कूल में मुख्य अतिथि के रूप में तशरीफ ले गए तथा झण्डा फहराया तथा प्रायः 170 बच्चों व शहर के गणमाण्य 30 नागरिकों को सम्बोधित किया। जीवन मूल्यों व सकारात्मक सोच पर आपका बयान हृदयों को हिलाने वाला था। इस स्कूल में निहायत गरीब अभावग्रस्त व अनाथ बच्चे मुफ्त शिक्षा व संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। मिशन की ओर से सभी बच्चों को मिष्ठान भी खिलाया गया।

❖ 30 जनवरी को रुड़की के निकट स्थित COER (College of Engineering Roorkee) में स्थित MBA Department में 160 विद्यार्थियों को उद्बोधन दिया। विषय-Balance Between Stress and Excellence in Life. अच्छा वातावरण बना।

❖ 31 जनवरी को देवाश्रम रुड़की के परिसर में स्थानीय समाजसेवी एक संस्था 'वानप्रस्थी जनजागृति अभियान समिति' का चतुर्थ स्थापना दिवस मनाया गया। जिसमें चिन्मय मिशन रुड़की की ब्रह्मचारिणी सुदीप्ति जी मुख्य अतिथि रहीं तथा प्रो. नवनीत जी ने अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में आपने 'I am due to others' and 'My life is for others' दोनों बातों पर प्रकाश डाला। बड़ा अच्छा वातावरण बना। प्रायः 70 स्थानीय प्रबुद्ध गणमान्य जन लाभान्वित हुए।

❖ 09 फरवरी, 2019 को राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय, गाँव शिकारपुर, जिला हरिद्वार में अध्यापकों को डॉ. नवनीत जी ने सम्बोधित किया। तत्पश्चात् 'जीवन का लक्ष्य' विषय पर प्रायः 300 विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। आपके भिन्न श्रीमान् जवाहर लाल जी एवं श्री ईश्वर दत्त जी शर्मा ने भी बच्चों को कुछ समय सम्बोधित किया। श्री शिवम राणा व श्री दीपक चौधरी (उद्गम संस्था के सदस्यों) ने यह कार्यक्रम इस विद्यालय में रखवाया।

❖ 15 फरवरी, 2019 को PEC University, Chandigarh में M. Tech व Ph.D के प्रायः 40 विद्यार्थियों को उद्बोधन दिया। आपने नेक चरित्र पर बल दिया। सकारात्मक सोच व जीवन में सन्तुलन का महत्त्व बताया। विद्यार्थियों ने बेहद लाभ उठाया। यहाँ पर आप एक पी.एच.डी. Viva का Exam लेने गए हुए थे। ज्ञातव्य है कि इसी कॉलेज में नवनीत जी फरवरी 1990 से अगस्त 1991 के दौरान पढ़ाते भी रहे हैं।

मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन गरूर है।

आ गया मौक़ा एक अनूठे उत्सव में शामिल होने का
जी हाँ

सम्बन्धों का उत्सव 2019

इसमें हम जानेंगे

हमारा जीवन क्या है, क्यों है और किनकी बदौलत है?
भाई-बहनों में परस्पर समझ, विश्वास व स्नेह का वर्द्धन कैसे हो?
अपने जीवनसाथी के साथ सामंजस्य, सुख व शान्ति का जीवन कैसे बितायें?
अपने जीवन के रचयिता माँ-बाप को किस दृष्टि से देखें व अपने बच्चों को
संस्कार कैसे दें? अपने बच्चों का भविष्य कैसे सँवारें?

आइये, आज कुछ पल देकर आने वाले सभी पलों को सँवारे लें!

जीते जी स्वर्ग में

15 मार्च, 2019 शुक्रवार
सायं 5:30 से 7:00 बजे

सुखी व सार्थक वैवाहिक जीवन

16 मार्च, 2019 शनिवार
सायं 5:30 से 7:00 बजे

भाई-भगिनी यज्ञ साधन

16 मार्च 2019 शनिवार
प्रातः 09 से 10:30 बजे

माता-पिता व संतान यज्ञ साधन

17 मार्च 2019 रविवार
प्रातः 10 से 12 बजे

आज ही इस उत्सव से सपरिवार लाभ उठाने का संकल्प लें।
स्थान: Better Life Training Institute (देवाश्रम), रुड़की
32 सिविल लाइन्स, रुड़की
रजिस्ट्रेशन: 80778-73846, 94123-07242

ज्ञानी वह है, जो वर्तमान को ठीक प्रकार समझे और
परिस्थिति के अनुसार आचरण करे।

लगन को काँटों की परवाह नहीं होती है।

**अखबारों के रजिस्ट्रेशन एक्ट के नियम 8 के अनुसार
'सत्य देव संवाद' के विषय में आवश्यक ब्यौरा**

1. स्थान जहाँ से अखबार प्रकाशित होता है - रुड़की (उत्तराखण्ड)
2. प्रकाशन की अवधि - मासिक
3. प्रिंटर का नाम - ब्रिजेश गुप्ता
राष्ट्रीयता - भारतीय
पता - 711/40, मथुरा विहार,
मकतूलपुरी, रुड़की
4. पब्लिशर का नाम - ब्रिजेश गुप्ता
राष्ट्रीयता - भारतीय
पता - 711/40, मथुरा विहार,
मकतूलपुरी, रुड़की
5. सम्पादक का नाम - डॉ० नवनीत अरोड़ा
राष्ट्रीयता - भारतीय
पता डी-05, हिल व्यू अपार्टमेण्ट्स, आई. आई. टी., परिसर, रुड़की
6. अखबार के मालिक का नाम और पता - डॉ० नवनीत अरोड़ा
डी-05, हिल व्यू अपार्टमेण्ट्स, आई. आई. टी., परिसर, रुड़की

For mission details, Visit us : www.shubhho.com

सम्पर्क सूत्र :

सत्य धर्म बोध मिशन

रुड़की (99271-46962), दिल्ली (98992-15080), भोपाल (97700-12311),
सहारनपुर (98976-22120), गुवाहटी (94351-06136), गाज़ियाबाद (93138-08722), कपूरथला
(98145-02583), चण्डीगढ़ (0172-2646464), पदमपुर (09309-303537), अम्बाला (94679-48965),
मुम्बई (9870705771), पानीपत (94162-22258), लुधियाना (70094-36618)

स्वामी डॉ. नवनीत अरोड़ा के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री ब्रिजेश गुप्ता ने कुश ऑफ़सैट प्रैस, ग्रेटर कैलाश कॉलोनी,
जनता रोड, सहारनपुर में मुद्रित करवा कर 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की से प्रकाशित किया
सम्पादक - डॉ० नवनीत अरोड़ा, D-05, हिल व्यू अपार्टमेण्ट्स, आई.आई.टी. परिसर, रुड़की
ज़िला हरिद्वार - 247667 (उत्तराखण्ड) 01332-285667, 94123-07242